पूर्वोत्तर भारतीय साहित्य

साहित्यमाला योजना

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

भारत सरकार

साहित्यमाला योजना

पूर्वोत्तर भारतीय साहित्य

अध्यक्ष, परामर्श एवं संपादन मंडल
डॉ. रविप्रकाश टेकचंदाणी

परामर्श मंडल
डॉ. कमल किशोर गोयनका
प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय
प्रो. त्रिभुवन नाथ शुक्ल
प्रो. अनंत कुमार नाथ
डॉ. दिनेश प्रताप सिंह

संपादक
डॉ. अनिता डगोरे

सह–संपादक
डॉ. अनुपम माथुर
श्रीमती अर्चना श्रीवास्तव

प्रूफ रीडर
इंदु भंडारी

कार्यालयीन व्यवस्था
सेवा सिंह

PED - 969
450 – 2016 (DSK-II)

साहित्यमाला : पूर्वोत्तर भारतीय साहित्य
© भारत सरकार, 2017

प्रकाशक :
केंद्रीय हिंदी निदेशालय,
उच्चतर शिक्षा विभाग,
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार,
पश्चिमी खंड-7, रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली-110066

मूल्य :	**देश में**	**Inland**	**₹ 223**
	विदेश में	**Foreign**	**$ 3.49**
			£ 2.64

बिक्री केंद्र :
नियंत्रक, प्रकाशन विभाग, सिविल लाइंस, दिल्ली - 110054

वेबसाइट : www.deptpub.gov.in
ई–मेल : aeop-dep@nicin; pub.dep@nic.in
दूरभाष : 011-23817823/ 9689
फैक्स : 011-23817846

पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। इनसे भारत सरकार या संपादन मंडल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

साहित्यमाला ग्रंथ योजना

पूर्वोत्तर भारतीय साहित्य

अनुक्रमणिका

1.	असमिया उपन्यास साहित्य	डॉ. त्रिभुवन नाथ शुक्ल	9
2.	मध्ययुगीन असमिया साहित्य : एक विहंगावलोकन	प्रो. भूपेंद्र रायचौधरी	17
3.	वैष्णव भक्तिधारा: श्रीमंत शंकरदेव	डॉ. शुभदा पांडेय	32
4.	नामघोषा–माधवदेव के आध्यात्मिक चिंतन का श्रेष्ठ संपुंजन	डॉ. हरेराम पाठक	41
5.	असमिया के मूर्धन्य उपन्यासकार होमेन बरगोहांई के समग्र उपन्यासों का एक विवेचन	डॉ. मंजूमणि शइकिया	49
6.	बीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य का रचना-क्रम ('मृत्युंजय' के विशेष संदर्भ में)	डॉ. अमरेंद्र त्रिपाठी	62
7.	मायाबृत्त में चित्रित स्त्री–चेतना	नंदिता दत्त	79
8.	असमिया साहित्य	दिनकर कुमार	94
9.	असमिया भाषा में लिखित साहित्य का प्रथम युग	डॉ. प्रणति तालुकदार (मुदियार)	105
10.	पूर्वोत्तर भारत की आदिवासी लोककथाओं में मिथकीय चेतना (बोडो लोककथाओं के विशेष संदर्भ में)	डॉ. अनुशब्द	119
11.	पूर्वोत्तर की आदिवासी संस्कृति	डॉ. वी. आर. राल्ते	129
12.	पूर्वोत्तर की समकालीन कविता: अस्मिता का संघर्ष	डॉ. अनीता पंडा	137
13.	पूर्वोत्तर भारत की जनजातीय लोककथाओं में स्त्री–बुद्धिमत्ता	प्रो. हरीश कुमार शर्मा	148
14.	सौंदर्य एवं ऐतिहासिकता से भरा पूर्वोत्तर प्रदेश	दिनेश बी. नखाते	170

पूर्वोत्तर भारत की आदिवासी लोककथाओं में मिथकीय चेतना (बोडो लोककथाओं के विशेष संदर्भ में)

□ डॉ. अनुशब्द

पूर्वोत्तर भारत की ब्रह्मपुत्र उपत्यका में एक लंबे अर्से से बोडो जनजाति के लोग निवास करते हैं। असम की समतल भूमि खासकर कोकराझाड़, चिरांग, बाक्सा और उदालगुड़ी जिले में इस जनजाति की आबादी मिलती है। इतिहासविदों के अनुसार हिमालय पर्वत की उत्तर दिशा तथा चीन के पश्चिम में अवस्थित 'बड' नामक देश से आने वाले ये लोग पंद्रहवीं शताब्दी के आस-पास पूर्वी भारत में फैल गए थे। कुछ लोगों का मानना हैं कि महाभारत में उल्लिखित 'किरात' ही 'बोडो' हैं। प्राचीन काल में बड देश के लोगों को 'बडो-फिसा' या 'बडोसा' नाम से जाना जाता था। 'बडो' का अर्थ है 'भूमि' और 'फिसा' का अर्थ है 'संतान'। 'बडोसा' को ही कालांतर में 'बोडो' कहा गया। आज भी समग्र असम प्रदेश में बोडो लोगों को भूमिपुत्र कहा जाता है। 2011 की जनगणना के अनुसार इस जनजाति की जनसंख्या असम में प्राय: 1300000 है। असम के अलावा बंगाल के पश्चिमी इलाकों, नागालैंड, मेघालय और अरुणाचल प्रदेश में भी इस जनजाति के लोग निवास करते हैं।

बोडो जनजाति भारत की अन्य जनजातियों से थोड़ी भिन्न एवं विशिष्ट है। सभ्य समाज से दूर जंगलों में अकेले जीवन व्यतीत करने के बजाय ये लोग उन्नत समाज व्यवस्था में निवास और विश्वास करते आए हैं। यही कारण है कि बोडो जनजाति अन्य जनजातियों की तुलना में आधुनिकता से अधिक प्रभावित